टक्साली भवन : परिचय

Duration : 04.20 **Transcribed words :** 804

- संगीत -

00.09 ओम प्रकाश टक्साली : मेरा नाम ओम प्रकाश टक्साली है...

00.11 राजेन्द्र टक्साली : मेरा नाम राजेन्द्र टक्साली है...

00.12 सुनील टक्साली : मेरा नाम सुनील टक्साली है...

00.13 विरेन्द्र टक्साली : मेरा नाम विरेन्द्र टक्साली है... मेरा बचपन यहीं पे गुजरा है...

00.16 राजेन्द्र टक्साली: जन्म से ही टक्साली भवन में रह रहे हैं हम लोग... ये बिल्डिंग, जब जयपुर बसा, उस वक्त की बनी हुई है... ये समझ लीजिये आप दो सौ ढाई सौ साल पुरानी होगी...

00.29 सुनील टक्साली : जयपुर दरबार, राजा मानसिंह के जमाने में टक्साल हमारी हुआ करती थी... टक्साल मीन्स जहाँ सिक्के छपा करते थे...

00.36 विरेन्द्र टक्साली : बाकी फादर्स वगैरह कहते थे कि हम लोग चौक में ही सो जाते थे... चांदी की, उस समय चांदी का व्यापार होता था, तो सिल्लियाँ आती थीं... चांदी की सिल्लियाँ पे सो जाते थे, ट्रक के ट्रक आते थे... बहुत लम्बा चौड़ा काम था, तो...

00.47 ओम प्रकाश टक्साली : यहाँ पहले सिक्के बनके, साँचे बनके चांदी की टक्साल जाते थे... वो अब मैंने देखा नहीं, बुजुर्गों ने देखा है...

00.55 सुनील टक्साली : वो सारी हमारे फोर फादर के अंडर में थी, जहाँ टक्साल में सिक्के छपते, इट मीन्स टक्साल... इसलिये हमारा बैक पड़ा टक्साली... और जैसे जैसे राजा का दरबार खत्म होता गया, तो वो हमारी पावर छिनती गई... और एक नया स्वरूप वो इंडिया

गवर्नमेंट ने ले लिया, आर. बी. आई... वो पहले हम उसके थे, और हमारे दादा के साईन चला करते थे... फिर, इसलिये हमारा बैक पड़ा टक्साली... और हिन्दुस्तान में जो भी टक्साली बैक होगा, वो हमारे परिवार का ही सदस्य होगा... दुनिया में कोई भी दूसरा सदस्य टक्साली नहीं लगायेगा...

01.24 राजेन्द्र टक्साली : जयपुर शहर में हम लोगों के करीबन साठ टक्साली भवन हैं... उनमें से मुख्य बाजार पे दो ही स्थित हैं, एक ये है और एक दूसरा है... बाकी आसपास गलियों के अंदर हैं...

01.36 सुनील टक्साली : इस भवन में हम करीब डेढ सौ से दो सौ आदमी थे जो एक हमारे दादा के परिवार की ही औलादें थीं सबकी... और हम करीब चौथी पीढ़ी में रन कर रहे हैं और हम बड़े मिल जुलकर रहते थे... इनडोर गेम वगैरह काफी होते थे, जो आजकल के यंगस्टर जानते ही नहीं... फिर धीरे धीरे परिवार बढ़ते गये और धीरे धीरे लोग चैक आउट करते गये... यंगस्टर का रूझान कम होता गया, लेकिन हमारी पीढ़ी तक, आज भी इस टक्साली वंश से जुडी हुई है...

02.02 राजेन्द्र टक्साली : शुरूआत ही यहाँ से हुई है... पैदा ही यहाँ हुये हैं... मैं यहाँ पैदा हुआ... मेरी सात बहने हैं, वो भी यहीं पैदा हुई... मेरे पेरैन्ट्स, ग्रैंड पेरैन्ट्स, दादा दादी, पड़दादा दादी, वो लोग भी यहीं रहते थे... ईवन पड़दादा के कजन्स वगैरह भी यहाँ रहते थे...

02.19 विरेन्द्र टक्साली : छोटे थे जब खूब खेलते थे और उठते थे सब बच्चे... किसी को खेलना होता था तो बुला लेते थे किसी दूसरे कमरे में से... कभी कहीं सो जाते थे... कोई ताला नहीं लगता था यहाँ पे... मर्जी आये जैसे खेलना और किसी में, कहीं भी सो जाना.. कोई ऑब्जैक्शन नहीं था... सब मिल जुलके रहते थे...

02.33 राजेन्द्र टक्साली : कुछ मेजर फैमलीज थी यहाँ पे... उनके जैसे एक परिवार के अंदर बीस पच्चीस लोग-बाग एक जगह खाना खा रहे हैं... फिर, इन ड्यू कोर्स ऑफ टाईम अलग होते गये... पहले एक साथ, एक ही जगह खाना बनता था... फिर धीरे धीरे, जैसे जैसे ज्यादा

बच्चे होते गये, परिवार टूटते गये, विघटन होता गया... और वो, उनकी रसोई भी अलग बनने लगी... वरना पहले एक ही जगह बनती थी...

03.00 सुनील टक्साली : हम टक्साली भवन में ही पैदा हुये... यहीं पले बढ़े... तो इसलिये हमारी पेरैन्टल यादें यहीं जुडी हुई हैं... हालाँकि इसकी बहुत कीमत है, लेकिन हम हमारी यादों के सहारे इसको छोड़कर नहीं जाना चाहते हैं...

03.11 राजेन्द्र टक्साली : एक, यादों से जुडे हुये हैं... पुरानी यादें, तो उसके कारण यहाँ रहना बहुत अच्छा लगता है... हालाँकि यहाँ चढ़ने के अंदर, उतरने में काफी परेशानी होती है... लेकिन यादों के साथ रहने के सिवाये उसके मुकाबले ये कुछ भी नहीं है... तो एक छोटी सी कम्परोमाईज है... और वैसे तो अपने आप एक्सरसाईज हो जाती है चढ़ने उतरने से... अगर चढ़ने उतरने में परेशानी हो रही है तो वो भी अपने आप में एक बहुत बढ़िया एक्सरसाईज है...

03.46 राजेन्द्र टक्साली : केवल चार परिवार रह गये हैं... बाकी जो लोग-बाग हैं, क्योंकि वो, परिवार उनके बढ़ते गये, उनको रहने की जगह कम रही, तो छोड़ छोड़ के जाते रहे...

03.59 सुनील टक्साली : चाहें ये बिलकुल जर्जर अवस्था में हो गया है, लेकिन हम न तो इसको ठीक कराना चाहते हैं और न इसको छोड़ के जाना चाहते हैं... और हम अपने आपको बहुत महफूज महसूस करते हैं कि हम परिवार में रह रहे हैं...